आनन्द कुमार त्रिपाठी
सहायक प्रोफेसर (इतिहास)
रोहतास महिला कालेज, सासाराम

बी०ए०(प्रतिष्ठा-इतिहास), तृतीय वर्ष
प्रश्नपत्र -

'अकबर की धार्मिक नीति'

अकबर प्रथम सम्राट था जिसके धार्मिक विचारों में क्रमिक विकास दिखायी पड़ता है। उसके इस विकास को तीन कालों में विभाजित किया जा सकता है।

प्रथम काल (1556-1575ई०) – इस काल में अकबर इस्लाम धर्म का कट्टर अनुयायी था। जहाँ उसने इस्लाम की उन्नति हेतु अनेक मस्जिदों का निर्माण कराया वहीं दिन में पाँच बार नमाज पढ़ना, रोजे रखना, मुल्ला मौलवियों का आदर करना जैसे उसके मुख्य इस्लामिक कृत्य थे।

द्वितीय काल (1575-1582 ई०) – अकबर का यह काल धार्मिक दृष्टि से क्रांतिकारी काल था। 1575 ई० में उसने फतेहपुर सिक्री में इबादतखाने की स्थापना की। उसने 1578 में इबादतखाने को धर्मसंसद में बदल दिया। उसने शुक्रवार को मांस देड़ दिया। अगस्त-सितम्बर 1579 ई० में महजर की घोषणा कर अकबर धार्मिक मामलों में सर्वोच्च निर्णायक बन गया। महजरनामा का प्रारूप शेख मुबारक द्वारा तैयार किया गया था। उलेमाओं ने अकबर को 'इमामे आदिल' घोषित कर विवादास्पद मामले पर आवश्यकतानुसार निर्णय का अधिकार दे दिया।

तृतीय काल (1582-1605ई०) – इस काल में अकबर पूर्णरूपेण दीन-ए-इलाही में अनुरक्त हो गया। इस्लाम धर्म में उसकी निष्ठा कम हो गयी।

हर रविवार की संध्या को इबादतखाने में विभिन्न धर्मों के लोग एकत्र होकर धार्मिक विषयों पर वाद-विवाद किया करते थे। इबादतखाने के प्रारम्भिक दिनों में शेख, पीर, उलेमा ही यहाँ धार्मिक वार्ता हेतु उपस्थित होते थे परन्तु कालान्तर में अन्य धर्मों के लोग जैसे इसाई, जरथुस्त्रवादी, हिन्दू, जैन, पारसी, बौद्ध, सूफी आदि को भी इबादतखाने में अपने-अपने धर्म के पक्ष को प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित कियागया। इबादतखाने में होने वाले वाद-विवादों में अबुल-फजल की महत्वपूर्ण भूमिका होती थी।

Scanned with CamScanner

दीन-ए-इलाही — सभी धर्मों के सार संग्रह के रूप में अकबर ने 1582 ई० में दीन-ए-इलाही (तौहीद-ए-इलाही) या दैवी एकेश्वरवाद नामक धर्म का प्रवर्तक बना तथा उसे राजकीय धर्म घोषित कर दिया। इस धर्म का प्रधान पुरोहित अबुल फजल था। इस धर्म में दीक्षा प्राप्त करने वाला व्यक्ति अपनी पगड़ी एवं सिर को सम्राट अकबर के चरणों में रखता था। सम्राट उसे उठाकर अपने सिर पर पुनः पगड़ी रखकर शास्त (अपना स्वरूप) प्रदान करता था जिस पर 'अल्ला हो अकबर' खुदा रहता था। इस मत के अनुयायी को अपने जीवित रहते ही श्राद्ध भोज देना पड़ता था। मांस खाने पर प्रतिबंध था एवं वृद्ध महिला तथा कम उम्र की लड़कियों से विवाह करने पर रोक थी। महत्वपूर्ण हिन्दू राजाओं में बीरबल ने इस धर्म को स्वीकार किया था। 1583 ई० में एक नया कैलेण्डर इलाही संवत शुरू किया। अकबर पर इस्लाम धर्म के बाद सबसे अधिक असर हिन्दू धर्म का था।

अबुल फजल ने 'अरस्तु' द्वारा उल्लिखित 4 तत्वों आग, हवा, पानी, भूमि को सम्राट अकबर की शरीर संरचना में समावेश माना। अबुल फजल ने योद्धाओं की तुलना 'अग्नि' से, शिल्पकारों एवं व्यापारियों की तुलना 'हवा' से, विद्वानों की तुलना 'पानी' से एवं किसानों की तुलना 'भूमि' से की।

'अकबर के कुछ महत्वपूर्ण कार्य'

1562 ई० - दास प्रथा का अंत
1563 ई० — तीर्थ यात्रा कर समाप्त
1564 ई० - जजिया कर समाप्त
1571 ई० — फतेहपुर सिकरी की स्थापना एवं राजधानी का हस्तान्तरण
1575 - इबादतखाने की स्थापना
1578 - इबादतखाने में सभी धर्मों के लोगों को प्रवेश की अनुमति
1579 - 'महजर' की घोषणा
1582 ई० - 'दीन-ए-इलाही' की घोषणा
1583 ई० - इलाही संवत् की स्थापना

Scanned with CamScanner